ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी, टाटा स्टील फाउंडेशन के अंतर्गत हाशिये पर आ चुके समुदायों विशेषतः अनुसूचित जनजाति के लिए ही कार्यरत इकाई है। यह एक अव्यवसायिक और स्वंयसेवी संगठन है। ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी की यात्रा 1974 में तब शुरू हुई जबकी इसके जनजातीय मामलों के लिए एक संयुक्त समिति के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया। वर्ष 1983 में समिति पंजीयन अधिनियम के तहत इसका एक समिति के रूप में पंजीयन कराया गया । टाटा ट्राईबल कल्चरल सोसाईटी का मुख्य उद्देश्य जनजाति अस्मिता और धरोहर को प्रोत्साहित करना है। यह जनजातीय जीवन, संस्कृति तथा आजीविका के विभिन्न पक्षो में आर्थिक पहल के जरिए जनजातीय कला और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन से सम्बद्ध गतिविधियों पर केन्द्रित है।

कार्य के प्रमुख क्षेत्र है :-

- जनजातीय समुदायों की देशज अस्मिता या मौलिक पहचान का संरक्षण और संवर्धन।
- सशक्त समाजों के निर्माण हेतु शिक्षा को विशेषतः युवाओं के मध्य प्रोत्साहित करना।
- कौशल विकास के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को रोजगार हेतु प्रोत्साहित करना।

Address :-

In association with

TRIBAL CULTURE SOCIETY, JAMSHEDPUR
(An Ethnicity wing of TATA STEEL FOUNDATION)

E.Road Northen Town Bistupur
Jamshedpur - 831001 (Jharkhand)
Contact No : +918579015646
jiren.topno@tatasteel.com
shiv.kandeyong@tatasteelfoundation.org

TATA STEEL FOUNDATION TATA

कुँड़ुख़ टाईम्स

(अंक 06, जनवरी से मार्च 2023)

वेब पत्रिका का त्रैमासिक मुद्रित संस्करण

Kurukhtimes.com

धुमकुड़िया महबा विशेषांक

Prepared by :

Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya
Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

In Association with:

TRIBAL CULTURAL SOCIETY, JAMSHEDPUR
An Ethnicity Wing of TATA STEEL FOUNDATION

TATA STEEL FOUNDATION

TATA

Tata Steel Foundation (Foundation), a wholly owned subsidiary of Tata Steel Limited, was incorporated on August 16,2016. With over 600 members spread across eleven units and two states of Jharkhand and Odisha, the Foundation is a CSR implementing organisation focused upon co-creating solutions, with tribal and excluded communities, to address their development challenges reaching more than 1.5 million lives annually across 4,500 villages. The Foundation endeavours to implement change models that are replicable at a national scale, enabling significant and lasting betterment of communities proximate to Tata Steel's operating locations while embedding a societal perspective in key business decisions. The Foundations strives for excellence by ensuring that all programmes are aligned with community needs and focused upon national priority areas enabling communities to access and control resources to improve the quality of their lives with dignity.

[illegible]
कुँड़ुख़ टाईम्स

https://kurukhtimes.com

वेब वर्जन पत्रिका का त्रैमासिक मुद्रित संस्करण

(अंक 06, जनवरी से मार्च 2023)

Consulting Editor :

Sri Kislaya, Ranchi
Mob. # 9431113111

Executive Editor :

Dr. Bindu Pahan, Jamshedpur
Mob# 9798956544

Co-ordinator :

Dr. Narayan Oraon, Sainda, Sisai, Gumla, Mob. # 9771163804

Assistent Co-ordinator :

Shri Bhuneshwar Oraon, Tilsiri, Ghaghra Gumla, Mob # 9798956544

Editorial Board :

1. Shri Jita Oraon, Ranchi
Mob. # 9905215471
2. Dr. Meena Toppo, Ranchi
Mob# 9431729685
3. Shri Bipta Oraon, Jogo Pahar, Ranchi, Mob# 9798956544
4. Mr. Mahadeo Toppo, Ranchi
Mob. # 7250212369
5. Dr. (Smt.) Shanti Xalxo, Ranchi
Mob. # 9905215471
6. Dr. Satyotam Bhagat, Jamshedpur
Mob. # 9608706239
7. Dr. Narayan Bhagat, Ranchi
Mob. # 8521458677

Publication Office :

Tolong Chambbi, Boreya Road, Chirondi, Nagra Dippa, PS: Bariatu, Dist. : Ranchi (Jharkhand), Pin: 834006

Publiced by :-

Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya Parha Akhra (Addi Akhra), Ranchi

Prepared by :-

Addi Kurukh Chaala Dhumkuriya Parha Akhra (addi Akhra), Ranchi

In association with

TRIBAL CULTURAL SOCIETY JAMSHEDPUR

An Ethnicity Wing of

TATA STEEL FOUNDATION

तरपाँती	–	पईत्त पाब	–	पक्खे
1. तोलोंग सिकि (लिपि) का आधार (प्रकृति और कलाकृति)			–	02
2. कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि तोड़पाब (वर्णमाला)			–	03
3. कुँड़ुख़ हहस (कुँड़ुख़ ध्वनियाँ)			–	04
4. कुँड़ुख़ भाषा की ध्वनियाँ एवं व्यवहार			–	05
5. तोलोंग सिकि यूनिकोड विकास हेतु कैलिफोरनियाँ विश्वविद्यालय, अमेरिका से तोलोंग सिकि के संबंध में मांगी गई जानकारी संबंधी विचार गोष्ठी			–	13
6. एःन असम ता पचगी कुँड़ुख़न			–	14
7. चा बागान ता श्रमिकर गही दर्द भरी जुबान			–	18
8. डण्डा कट्टना / पल्ल काँसना / भाख खण्डना नेःत–नेःग अरा चिनहाँ			–	20
9. ख़ाड़–ख़ोसरा ता चोंग्गना–बोंग्गना अम्मे			–	22
10. ख़द्द परिया (कविता)			–	24
11. बुदो उराँव पब्लिक स्कूल, हहरी (कुँड़ुख़ इंग्लिस मिडियम स्कूल) में वार्षिक खेलकूद एवं सामाजिक भागीदारी			–	27
12. धुमकुड़िया महबा उल्ला (धुमकुड़िया गौरव दिवस) ग्राम सैन्दा से आरंभ			–	28
13. कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह समारोह गुमला जिला 2023			–	29
14. कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह समारोह लोहरदगा जिला 2023			–	30
15 कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह समारोह राँची जिला 2023			–	31
16. ऑल कुँड़ुख़ स्टूडेन्ट यूनियन, असम द्वारा आयोजित ''तोलोंग सिकि कार्यशाला'' में डॉ० नारायण उराँव			–	32

[illegible] (पेंच्छका = संपादकीय)

[illegible]

[illegible]

Dated - 15.03.2023 — *Bindu Pahan, E. Editor*

तोलोङ सिकि (लिपि) का आधार

तोलोङ सिकि (लिपि) : आदिवासी भाषा, संस्कृति, रीतिरिवाज, परम्परा, विज्ञान एंव आध्यात्म का अद्भूत प्रस्तुतिकरण

2. (कुँडुख़ तोलोङ सिकि तोःड़पाब)
Tolong Siki Alphabet / तोलोङ सिकि वर्णमाला

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण (Vowels)

इ i　　ए e　　उ u　　ओ o　　अ a　　आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙ (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ' (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक,
~ (एवाँ) = नासिक्य स्वर सूचक, ‿ (रेवाँ) = लुप्ताकार र, । (हेचका) = विकारी अ

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण (Consonants)

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् w	़ ż
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या, Numerals

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

(ख़द्दर ही कत्थ लूर अरा कत्थ बेयाँख़ो) = बच्चों का भाषा ज्ञान और भाषा विज्ञान

(पा), (बा), (मा), (ता), (दा), (ना), (का), (गा), (जा),

(पपा) = रोटी, (बबा) = पिताजी, (ममा) = Cooked rice, भात।

(पल्ले) = दाँत, (बई) = मूँह, (मेलख़ा) = Epiglottis, उप कण्ठ।

(ततख़ा) = जीभ, (दुदु) = दूध, (नरटी) = Oesophagus, ग्रासिका।

ताःका एमसाःर'ई, पल्ले, बई, मेलख़ा, होलेम चीं:ख़नर ख़द्दर।

ततख़ा, दुदहिन, नरटी तरा तईयी, होलेम उज्जनर ख़द्दर।।

(कुडुख़ भाषा, संस्कृति, सामाजिक एवं प्राकृतिक अवदान तथा भाषा, विज्ञान आधारित लिपि)

3. कुँडुख़ हहस/कुँडुख़ भाषा की ध्वनियाँ (Kur̤ux phonemes)

1. कुँडुख़ कत्था ही मूली सरह (कुँडुख़ भाषा की मूल स्वर स्वर ध्वनियाँ / Primary Vowel) : -

बइता सरह (मौखिक स्वर, Oral vowel)		मुँइता सरह (नासिक्य स्वर, Nasal vowel)	
सन्नी सरह (हृस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (दीर्घ स्वर, long vowel)	सन्नी सरह (हृस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (दीर्घ स्वर, long vowel)
- इ, i	- इः i:	- इँ ĩ	- इँः ĩ:
- ए, e	- एः e:	- एँ ẽ	- एँः ẽ:
- उ, u	- उः u:	- उँ ũ	- उँः ũ:
- ओ, o	- ओः o:	- ओं õ	- ओंः õ:
- अ, a	- अः a:	- अँ ã	- अँः ã:
- आ, ā	- आः ā:	- आँ ā̃	- आँः ā̃:

2. कुँडुख़ कत्था ही जोट्ठा सरह (कुँडुख़ भाषा का संयुक्त स्वर / Diphthong) :–

जोट्ठा सरह – अइ, अउ, ऐ, औ इउ, उइ, अय, अव, अँइ, अँउ, ऐं, औं, इँउ, उँइ, अँय, अँव.

3. कुँडुख़ कत्था ही मूली हरह (कुँडुख़ भाषा की मूल व्यंजन ध्वनियाँ / Primary Consonant) -

अघोष / NonVoiced		सघोष / voiced		सघोष / voiced		अघोष/NonVoiced
मौखिक अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक महाप्राण Aspirated	मौखिक अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक महाप्राण Aspirated	नासिक्य अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक अल्पप्राण Non aspirated	मौखिक अल्पप्राण Non aspirated
प्	फ्	ब्	भ्	म्	- -	- -
त्	थ्	द्	ध्	न्	य्	- -
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	र्	स्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ल्	ह्
क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	व्	ख़्
- -	- -	ड़्	ढ़्	ञ़्	- -	- -

4. KURUKH PHONEMS AND EXAMPLES / कुँड़ुख़ भाषा की ध्वनियाँ एवं व्यवहार

** – डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा''

कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा एक प्राचीन भाषा है। अपने प्राचीन भारत की कुँड़ुख़ भाषा को आजादी से पूर्व रोमन लिपि में कई पुस्तकें लिखी गईं, जो आज भी देश–विदेश के पुस्तकालयों में एक अभिलेख की तरह हैं। कालांतर में देश की आजादी के 3 दशक बाद, देवनागरी लिपि के आधार पर राँची विश्वविद्यालय, राँची के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई आरंभ हुई। धीरे–धीरे भाषायी जनजागरण एवं आंदोलन के क्रम में झारखण्ड राज्य की स्थापना के बाद वर्ष 2003 में तीन आदिवासी भाषा की लिपि की मान्यता झारखण्ड सरकार में मिली। इनमें से संताली भाषा की लिपि – ओलचिकि, हो की लिपि – वराङचिति तथा कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की लिपि – तोलोङ सिकि है। वर्तमान में इन भाषा–लिपि के माध्यम से झारखण्ड में तथा वर्ष 2018 से पश्चिम बंगाल के कई क्षेत्रों में पठन–पाठन का कार्य चल रहा है।

विश्व के लिपि विकास के इतिहास में ध्वनिमूलक लिपि, अबतक सबसे अधिक विकसित एवं मानक पायी गयी है। यह ध्वनिमूलक लिपि दो प्रकार की हैं – (1) आक्षरिक लिपि (2) वर्णिक लिपि। आक्षरिक लिपि सामान्यतया प्रयोग की दृष्टि से ठीक है, किन्तु भाषा विज्ञान में जब ध्वनियों का विश्लेषण होता है, तब कमी स्पष्ट पता चलती है। वैसे लिपि विकास की प्रथम सीढ़ी चित्र लिपि है तथा अंतिम सीढ़ी वर्णिक लिपि है। वर्णिक लिपि भाषा विज्ञान की दृष्टि से आदर्श लिपि है। इन विकसित लिपियों में से रोमन लिपि, वर्णिक लिपि है, जबकि देवनागरी, गुजराती, अरबी, उर्दू, बंगला, उड़िया पंजाबी इत्यादि आक्षरिक लिपि है। उपरोक्त ध्वनिमूलक वर्णिक लिपि के ये विशिष्ट गुण तोलोङ सिकि, लिपि की विशेषता है।

दूसरी ओर Census of India - 2011 (Linguistc) के अनुसार भारत में कुल 121 अनुसूचित तथा गैर अनुसूचित भाषाओं को 05 भाषा परिवार के समूहो में वर्गीकृत किया गया है। वर्गीकरण निम्न प्रकार है :– 1. इंडो–यूरेपियन (INDO-EUROPEAN) - (क) इंडो–आर्यन (INDO-ARYAN) (ख) इरानियन (IRANIAN) (ग) जर्मेनिक (GERMANIC) 2. द्रविड़यन् (DRAVIDYAN) 3. आष्ट्रो–एशियाटिक (AUSTRO-ASIATIC) 4. तिब्बतो–बर्मिज (TIBETO-BURMESE) 5. सेमीटो–हमीटिक (SEMITO-HAMITIC)।

कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि (लिपि), सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार वाली है तथा तकनीकी अनुकूलता के सिद्धांत पर आधारित है। ज्ञात है कि कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा द्रविड़ परिवार की भाषा है, अतएव भाषा की सांस्कृतिक विरासत की संवृद्धि के लिए यह द्रविड़ भाषा की sitting script समूह में निर्धारित हैं। वर्णमाला का निर्धारण सरल से कठिन की ओर है। सभी स्वनिम (phonemes) के वर्ण चिन्ह हैं, सहस्वानिक ध्वनियों (allophones) के नहीं।

1. VOWEL SOUND / स्वर ध्वनियाँ / [Tolong Siki]

(i) Primary short oral vowel / मूल मौखिक सन्नी (ह्रस्व) स्वर –

[Tolong Siki] = i = इ - [Tolong Siki] - इज़्जो, इजगो, तिरयो
[Tolong Siki] = e = ए - [Tolong Siki] - एड़पा, एपटा, एड़ना
[Tolong Siki] = u = उ - [Tolong Siki] - उगता, उड़्डु , उसाङी
[Tolong Siki] = o = ओ - [Tolong Siki] - ओसगा, ओरोख़, ओदना
[Tolong Siki] = a = अ - [Tolong Siki] - अड़ख़ा, अखड़ा, अहड़ा
[Tolong Siki] = ā = आ - [Tolong Siki] - आल, आस, आद, आर

(ii) Primary long oral vowel / मूल मौखिक दिगहा (लम्बा) स्वर –

[Tolong Siki] = i: = इः - [Tolong Siki] - इःमा, कीःड़ा, तीःनना
[Tolong Siki] = e: = एः - [Tolong Siki] - एःड़ा, नेःला, तेःला
[Tolong Siki] = u: = उः - [Tolong Siki] - उःरा, कूःबी, तूःरा
[Tolong Siki] = o: = ओः - [Tolong Siki] - ओःड़ा, मोःड़ा, ओःगा

= a: = अ - - अःव, दःव, कःव, लःय
= ā: = आ - - आःली, आःलो, काःलो

(iii) Primary short nasal vowel / मूल नासिक्य सन्नी (ह्रस्व) स्वर –
= ĩ = इँ - - चिंचो, चिंहुट, चिं ा
= ẽ = एँ - - चेंड़ा, केंवड़ा, चेंटगर
= ũ = उँ - - गुँड़ना, कुँडुख़, कुँड़ा
= õ = ओं - - कोंहड़ा, गोंहड़ा, जोंहकर
= ã = अँ - - अँटा, खँटी, पँड़की
= ā̃ = आँ - - चाँड़, काँड़, साँढ़

(iv) Primary long nasal vowel / मूल नासिक्य दिगहा (लम्बा) स्वर –
= ĩ: = इँः - - बींःड़ी, चींःचो, बींःचो
= ẽ: = एँः - - पेंःड़े, हेंःड़े, चेंःपो
= ũ: = उँः - - कूँःड़, पूँःप, भूँःस
= õ: = ओंः - - कोंःड़ा, तोंःड़ो, बोंःड़ो
= ã: = अँः - - अँःत, अँःख़, सँःह
= ā̃: = आँः - - आँःड़को, भाँःड़ो, ताँःड़का

(v) Compound oal vowel / संयुक्त मौखिक स्वर –
= ai = अइ - - कइला, चइला, थइला
= au = अउ - - अउड़का, डउहड़ा, नउड़ा
= ae = ऐ/अय - - नैग, कैर, पयन, मयन
= ao = औ/अव - - बौग, नौर, तवन, पयन
= iu = इउ - - इउन्दा, चिउरा, निउरा
= ui = उइ - - उइरा, कुइला, टुइहला

(vi) Compound nasal vowel / संयुक्त नासिक्य स्वर –
= ãi = अँइ - - कँइत, गँइता, मँइता
= ãu = अँउ - - कँउड़, झँउड़, रँउड़
= ãe = ऐं - - चैंदआ, पैंड़ी, कैंची
= ão = औं - - चौंर, भौंरो, चौंड़ा
= ĩu = इँउ - - इँउरा, चिंउड़ा, इँउती
= ũi = उँइ - - पुँइदा, सुँइतु, टुँइ ा

2. Primary Consonant / मौलिक व्यंजन /
= p = प् - - पपला, पचरी, पहटा
= ph = फ् - - फँसरी, फटका, फटइर
= b = ब् - - बल्लु, बली, बिल्ली
= bh = भ् - - भदड़ी, भँड़की, भंडारी
= m = म् - - मरग, मचा, मइरचा
= t = त् - - ततख़ा, तड़री, तपड़ेम
= th = थ् - - थड़ा, थइला, थान

- [illegible] = d = द् - [illegible] - दउली, दुदही, दुब्बा
- [illegible] = dh = ध् - [illegible] - धनु, धरती, धनियाँ
- [illegible] = n = न् - [illegible] - नड़गा, नड़हा, नोल
- [illegible] = ṭ = ट् - [illegible] - टटख़ा, टमरस, टोका
- [illegible] = ṭh = ठ् - [illegible] - ठरकी, ठठरा, ठुठडी
- [illegible] = ḍ = ड् - [illegible] - डउड़ा, डिगची, डलङो
- [illegible] = ḍh = ढ् - [illegible] - ढरा, ढेरा, ढेकारी
- [illegible] = ṇ = ण् - [illegible] - भण्डा, डुण्डीए गण्डा
- [illegible] = ch = च् - [illegible] - चलकी, चपटा, चिमटा
- [illegible] = chh = छ् - [illegible] - छटका, छलकारना
- [illegible] = j = ज् - [illegible] - जल्ली, जंगला, जट्टा
- [illegible] = jh = झ् - [illegible] - झण्डा, झुड़ङा, झट्टा
- [illegible] = n̈ = ् - [illegible] - चि ा, सि ा, चो ा
- [illegible] = k = क् - [illegible] - ककड़ो, कड़मा, कुडरी
- [illegible] = kh = ख् - [illegible] - खपरा, खरपा, खपना
- [illegible] = g = ग् - [illegible] - गमछा, गगरा, गड़ी
- [illegible] = gh = घ् - [illegible] - घुघरी, घघरा, घड़ी
- [illegible] = ṅ = ङ् - [illegible] - झिलङी, झोलङो, डोङा
- [illegible] = y = य् - [illegible] - किया, जिया, पया, कोंयछा
- [illegible] = r = र् - [illegible] - रसड़ी, रहटा, रोःगे
- [illegible] = l = ल् - [illegible] - लट्टु, लड़ङ, लवटो
- [illegible] = v = व् - [illegible] - जवा, लवा, तवा, मड़वा
- [illegible] = ż = ़ - [illegible] - कोर ़ा, तूःज़, कु ़ी, म ़ी
- [illegible] = s = स् - [illegible] - सगड़, सिकड़ी, सुरती
- [illegible] = h = ह् - [illegible] - हड़का, हरिन, हँसली
- [illegible] = x = ख़् - [illegible] - ख़न्न, ख़ज्ज, ख़ेंस
- [illegible] = ṛ = ड़् - [illegible] - गेड़े, घोड़ो, गड़ना
- [illegible] = ṛh = ढ़् - [illegible] - गढ़े, उढ़, उढ़ीयारना
- I = a̤ = अ़ - [illegible] - नेअ़ना, बअ़ना, होअ़ना

3. Pure Compound Consonant / [illegible]

[illegible]	-	प्प – [illegible]	-	kappa	-	ꀠप्पा
[illegible]	-	ब्ब – [illegible]	-	jabbā	-	जब्बा
[illegible]	-	म्म – [illegible]	-	amm	-	अम्म
[illegible]	-	त्त – [illegible]	-	pattā	-	पत्ता
[illegible]	-	द्द – [illegible]	-	addi	-	अद्दी
[illegible]	-	न्न – [illegible]	-	mann	-	मन्न
[illegible]	-	ट्ट – [illegible]	-	aṭṭā	-	अट्टा
[illegible]	-	ड्ड – [illegible]	-	aḍḍā	-	अड्डा
[illegible]	-	ण्ण – [illegible]	-	maṇṇdi	-	मण्णडी
[illegible]	-	च्च – [illegible]	-	pachchā	-	पच्चा

[illegible]	-	ज्ज – [illegible]	-	chainnā	-	ओज्जा
[illegible]	-	ˎ – [illegible]	-	chainnā	-	चइ ˎ ा
[illegible]	-	क्क – [illegible]	-	makkā	-	मक्का
[illegible]	-	ग्ग – [illegible]	-	aggi	-	अग्गी
[illegible]	-	ङ्ङ – [illegible]	-	bonnā	-	बोङ्ङा
[illegible]	-	य्य – [illegible]	-	kiyyā	-	किय्या
[illegible]	-	र्र – [illegible]	-	charrā	-	चर्रा
[illegible]	-	ल्ल – [illegible]	-	nollā	-	नोल्ला
[illegible]	-	व्व – [illegible]	-	havvā	-	हव्वा
[illegible]	-	स्स – [illegible]	-	lassā	-	लस्सा

4. Mixed Compound Consonant / [illegible]

[illegible]	-	प्फ –	[illegible]	doppha	-	दोप्फा
[illegible]	-	ब्भ –	[illegible]	lebbhā	-	लेब्भा
[illegible]	-	त्थ –	[illegible]	otthā	-	ओत्था
[illegible]	-	द्ध –	[illegible]	laddhaṛ	-	लद्धड़
[illegible]	-	ट्ठ –	[illegible]	laṭṭhā	-	लट्ठा
[illegible]	-	ड्ढ –	[illegible]	loḍḍho	-	लोड्ढो
[illegible]	-	च्छ –	[illegible]	mechchhā	-	मेच्छा
[illegible]	-	ज्झ –	[illegible]	bajjhrā	-	बज्झरा
[illegible]	-	क्ख –	[illegible]	tokkhā	-	तोक्खा
[illegible]	-	ग्घ –	[illegible]	lagghrā	-	लग्घरा

5. Glottal check, short & long vowel in word

Glottal check	-	Short vowel	-	Long vowel
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]
[illegible]	-	[illegible]	-	[illegible]

6. Similar looking words.

[illegible] (bitnā)	-	[illegible] (bi:tnā)
[illegible] (chipnā)	-	[illegible] (chi:pnā)

(biṛi)	-	(bi:ṛi)
(bi:ṛi)	-	(bĩ:ṛi)
(pesnā)	-	(pe:snā)
(kẽsā)	-	(kẽ:sā)
(kubi)	-	(ku:bi)
(ṭusā)	-	(tu:sā)
(bolo)	-	(bo:lo)
(choro)	-	(cho:ro)
(chochā)	-	(cho:chā)
(kavs)	-	(ka:v)
(āl)	-	(ā:las)
(āli)	-	(ā:lid)
(ālo)	-	(ā:lo)
(kālo)	-	(kā:lo)
(nidi)	-	(ni:di)
(xoynā)	-	(xo:ynā)
(kuti)	-	(ku:ti)
(sāṛi)	-	(sā:ṛi)
(horā)	-	(ho:rā)
(jabnā)	-	(jabbnā)
(telā)	-	(te:lā)

7. Phonetic drill, अभ्यास / (हहस कसरत)

(i) 'i' & 'i:'

सन्नी इ अरा दिगहा इः गही बेहवार) (use of short 'i' & long 'i:')

idnā	इदना	=	रोपना
iṛnā	इड़ना	=	भूनना
ibṛā	इबड़ा	=	ये सब
titir	तितिर	=	तीतर
tiryo	तिरयो	=	बाँसुरी
bi:ṛi	बिड़ी	=	बिड़ी
tissā	तिस्सा	=	खट्टा
biṛnā	बिड़ना	=	धूप
chiḍrā	चिडरा	=	गिलहरी
i:ri	ईःरी	=	देखती है
xi:ri	ख़ीःरी	=	कहानी
ki:ṛā	कीःड़ा	=	भूख
ti:ni	तीःनी	=	मधुमक्खी
bi:ṛi	बीःड़ी	=	सूर्य
bĩ:ṛi	बींःड़ी	=	रानी

	-	ki:bā	-	की:बा	=	ओला
	-	ti:nā	-	ती:ना	=	दाहिनी ओर

(ii) ‘’ ‘:’

(सन्नी ए अरा दिगहा एः गही बेहवार) (use of short ‘e’ & long ‘e:’)

	-	eṛpā	-	एड़पा	=	घर
	-	ettnā	-	एत्तना	=	उतरना
	-	ḍherā	-	ढेरा	=	ढेरा
	-	relā	-	रेला	=	बहुत
	-	melā	-	मेला	=	मेला
	-	keṛā	-	केड़ा	=	केला
	-	ḍenā	-	डेना	=	डैना
	-	ṭeṭe	-	टेटे	=	फतिंगा
	-	cherā	-	चेरा	=	चेरा
	-	e:ṛā	-	एःड़ा	=	बकरी
	-	e:rā	-	एःरा	=	देखो
	-	xe:tā	-	ख़ेःता	=	दोना
	-	pe:ṭh	-	पेःठ	=	बाजार
	-	me:r	-	मेःर	=	धागा
	-	xe:r	-	ख़ेःर	=	मुर्गी
	-	xe͠:s	-	ख़ेंःस	=	खून
	-	te:lā	-	तेःला	=	केन्द
	-	he:rā	-	हेःरा	=	बंधायी

(iii) ‘’ ‘:’

(सन्नी उ अरा दिगहा उः गही बेहवार) (use of short ‘ u ’ & long ‘ u: ’)

	-	ugi	-	उगी	=	सिका
	-	hukā	-	हुका	=	हुक्का
	-	mukā	-	मुका	=	घुटना
	-	hu:dā	-	हुदा	=	ख्याति
	-	ugtā	-	उगता	=	हल
	-	uinā	-	उइना	=	रखना
	-	u:rā	-	ऊरा	=	झिंगुर
	-	u:xā	-	ऊख़ा	=	अंधेरा
	-	nollā	-	नोल्ला	=	छानो
	-	u:ru	-	ऊःरू	=	गोबरैला
	-	pu͠:p	-	पूँःप	=	फूल
	-	pu:ru	-	पूःरू	=	पागल
	-	mu:xi	-	मूःख़ी	=	खाती है
	-	mu:li	-	मूःली	=	मुख्य
	-	dhu:li	-	धूःली	=	धूल

(iv)
(सन्नी ओ अरा दिगहा ओः गही बेहवार) (use of short ‘ o ’& long ‘ o: ’)

	-	ku:bi	-	कूःबी	=	कुआँ
	-	ku:ṭi	-	कूःटी	=	किनारा
	-	nu:ṛi	-	नूःड़ी	=	धुलाई करती है

	-	osgā	-	ओसगा	=	मूस
	-	orot	-	ओरोत	=	अकेला
	-	ormar	-	ओरमर	=	सभी
	-	xochol	-	ख़ोचोल	=	हड्डी
	-	holā	-	होला	=	हलुवा
	-	ṭonā	-	टोना	=	गाँठ
	-	jhopā	-	झोपा	=	गुच्छा
	-	dovā	-	दोवा	=	दुआ
	-	o:ṛā	-	ओःड़ा	=	चिड़ियां
	-	o:sā	-	ओःसा	=	मसरूम
	-	mo:ṛā	-	मोःड़ा	=	मोरा
	-	no:ṛā	-	नोःड़ा	=	धोओ
	-	mo:chā	-	मोःचा	=	काटो
	-	mo:xā	-	मोःख़ा	=	खाओ
	-	bo:lo	-	बोःलो	=	नवजात
	-	go:do	-	गोःदो	=	घड़ियाल
	-	xo:rnā	-	ख़ोःर'ना	=	नवजीवन आना

(v)
(सन्नी अ अरा दिगहा अः गही बेहवार (use of short ‘ a ’& long ‘ a: ’)

	-	ayang	-	अयङ	=	माँ
	-	anā	-	अना	=	हे
	-	atxā	-	अतख़ा	=	पत्ता
	-	adin	-	अदिन	=	उसे
	-	amṛi	-	अमड़ी	=	माँड़
	-	asmā	-	असमा	=	रोटी
	-	aṛxā	-	अड़ख़ा	=	साग
	-	ahṛā	-	अहड़ा	=	मांस
	-	kalay	-	कलय	=	जाओ
	-	kalā	-	कला	=	जाओ
	-	barā	-	बरा	=	आओ
	-	babā	-	बबा	=	पिताजी
	-	mayā	-	मया	=	दया
	-	payā	-	पया	=	ताकत
	-	lakṛā	-	लकड़ा	=	बाघ

[illegible]	-	tatxā	-	ततख़ा	=	जीभ
[illegible]	-	gażnā	-	गज़्ना	=	ढेर बनाना
[illegible]	-	ṭaṭxā	-	टटख़ा	=	आम
[illegible]	-	ka:v	-	कःव	=	जाएगी
[illegible]	-	da:v	-	दःव	=	अच्छा

(vi) [illegible]
(सन्नी आ अरा दिगहा आः गही बेहवार) (use of short ‘ ā ’& long ‘ ā: ’)

[illegible]	-	ā	-	आ	=	वह (दूर के लिए)
[illegible]	-	ās	-	आस	=	वह (पु0)
[illegible]	-	ād	-	आद	=	वह (स्त्री0)
[illegible]	-	āl	-	आल	=	मानव जाति
[illegible]	-	ā:le	-	आःले	=	पुरुष
[illegible]	-	ā:li	-	आःली	=	स्त्री
[illegible]	-	ā:lo	-	आःलो	=	मानव इतर
[illegible]	-	ā:lar	-	आःलर	=	आदमी लोग
[illegible]	-	xāṛ	-	ख़ाड़	=	नदी
[illegible]	-	tā:chi	-	ताःची	=	बुआ
[illegible]	-	dā:li	-	दाःली	=	दाल
[illegible]	-	mā:si	-	माःसी	=	उड़द
[illegible]	-	tā:kā	-	ताःका	=	हवा
[illegible]	-	ḍā:ṛā	-	डाःड़ा	=	डाली
[illegible]	-	lā:tā	-	लाःता	=	बिल, साँप या चूहा बिल
[illegible]	-	pā:dā	-	पाःदा	=	जड़
[illegible]	-	kā:lā	-	काःलो	=	जाएगी
[illegible]	-	kā:di	-	काःदी	=	जाती है
[illegible]	-	nā:ṛā	-	नाःड़ा	=	पराली
[illegible]	-	tā̃:tar	-	ताँःतर	=	हँसुआ
[illegible]	-	chā̃:ṛe	-	चाँःड़े	=	जल्दी
[illegible]	-	chā̃:x'o	-	चाँःख़'ओ	=	बीज बोएगी

** शोध एवं संकलन :–
एम०जी०एम०मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल,
जमशेदपुर (झारखण्ड), # 9771163804
E-mail : oraon.narayan@gmail.com
Dated - 30 September 2022

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० नारायण भगत
विभागाध्यक्ष, कुँडुख़
डोरण्डा कॉलेज, राँची
मो० – 8521458677

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० (श्रीमत) शान्ति खलखो
सहायक प्राध्यापक (अनु०), कुँडुख
वी०बी०विश्वविद्यालय, हजारीबाग
मो० – 9905328984

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० तेतरू उराँव
सहायक प्राध्यापक (अनु०), कुँडुख
कार्तिक उराँव कॉजेज, गुमला
मो० – 9386745347

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० (सुश्री) लक्ष्मी उराँव
सहायक प्राध्यापक (अनु०),कुँडुख
डोरण्डा कॉलेज, राँची
मो० – 8877064526

सहयोग एवं समीक्षा :–
डॉ० (सुश्री) सीता कुमारी ‘उराँव’
सहायक प्राध्यापक (अनु०),कुँडुख
डी०पी०एम०विश्वविद्यालय, राँची
मो० – 6201847769

05. दिनांक 20.11.2022 दिन रविवार को अद्दी कुँडुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), राँची की मासिक बैठक अद्दी अखड़ा उप कार्यालय, चिरौन्दी, राँची में माननीय अध्यक्ष श्री जिता उराँव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में कुँडुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि के विकास के संबंध में चर्चा हुई। बैठक में जनजातीय एवं क्षंत्रीय भाषा चिभाग के शोधार्थी भी उपस्थित थे। शोधार्थियों द्वारा लिपि विकास के इतिहास की जानकारी की अपेक्षा की गई। इस विषय पर डॉ. नारायण उराँव द्वारा विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया। इसी क्रम में बतलाया गया कि यूनिकोड विकास के लिए कैलिफॉरनियाँ विश्वविद्यालय, अमेरिका से तोलोंग सिकि के संबंध में विस्तृत जानकारी मांगी गई है, जिससे तोलोंग सिकि लिपि का यूनिकोड बन सके। इस विषय वस्तु पर डॉ. नारायण उराँव द्वारा तैयार किया गया फॉनेटिक चार्ट दिखलाया गया, जिसपर उपस्थित विद्वतजनों ने सहमति बनी। इस बैठक में अद्दी एखड़ा के अध्यक्ष श्री जिता उराँव, कोषाध्यक्ष श्री बिपता उराँव, उपाध्यक्ष श्री भइया रामन कुजूर, संयोजक डॉ० नारायण उराँव, सदस्य डॉ० (श्रीमती) ज्योति टोप्पो, सहायक प्राध्यापक, डॉ० सीता कुमारी उराँव एवं शोधार्थ सुश्री लक्ष्मी उराँव उपस्थित थे। बैठक में निणर्य लिया गया कि डॉ० नारायण उराँव द्वारा तैयार किया गया फॉनेटिक चार्ट, यूनिकोड विकास हेतु कैलिफॉरनियाँ विश्वविद्यालय, भेजा जाए। इस संदर्भ में दिनांक 04.12.2022 दिन रविवार को कुँडुख़ भाषा–तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र के संयोजकों/शिक्षकों के प्रशिक्षणशाला में विस्तार पूर्वक विमर्श हुआ एवं यूनिकोड के लिए सहमत हुए।

৪. ঘঃদা ৱেন্নে এ। পাকেথ ঈশ্বরলাদা

- ৱেন্ন প্রালয়ম্ব কয়পপয়, ৱেন্নে

ঘঃদা ৱেন্নে এ। পাকেথ ঈশ্বরলাদা,
ঘলকান্ন ম্মঘঙ্গ দলয়ম ঘলম্মেদা ঙান্ন কঢ়দাকদান্নদ,
ঘলকান্ন দা।ঃকঢ় দলয়ম ঘলম্মেদা ৷৷ন্ন ঙান্ন লয়কয়দলদান্নদ,
ঘঃদা ঘগা। ঙ্গঘ কেঘলম্মেয়দ, ঘগা। ঙ্গঘ কঢ়গঢ়খ্য'য়দ,
ঘঃদা ৱেন্নে এ। পাকেথ ঈশ্বরলাদা.

ৱেন্নে ম্মেঘ ঘদাম্মঘদ ঙান্ন কঢ়কেগেন্নাদা,
ঢ় দা।ঃকঢ় ম্মেঘ ঘদাম্মঘদ ঙান্ন দান্নগেন্নাদা,
দঢ়থম্মাদা ঙ্গঘদান্ন"। ন্নান্নেম্মাদা লান্নদা। দঢ়ঃম্ম.

কা।লয়দ্ন। ম্মেঘ কা।ন্ন পয়পপা। ঢ়ম্ম"য় লা।ঃকঢ়,
ঘঃদা ঘলকান্ন গাঁন্নগেঘ কেঢ়ন্না। ম্মঢ়,
পৰাঁন্নকা। ম্মেঘ পয়ন্নদা। লেঘগেঘ,
গয়ঁন্না।-গয়ঁন্না। ঙান্নদান্নাদা কঢ়কেগেন্নাদা,
ঙান্নদান্ন ন্নঢ় গয়গন্নয়ান্না কান্নকেগেন্নাদা,
কান্নগা। কয়গন্নয় কয়লকেঢ়দা, ঙান্নম্মান্না, পান্নকম্মা। গান্নকেঘম্মান্না,
কয়দকেন্নঢ় গান্নদাকেয় কেঢ় কয়য়য়কেগেন্নাদা,
ম্মান্নকেঢ় কেঢ়পপান্না কয়ল"ঘ কেঢ় গান্নম্মেম্ম গান্নেগেন্নাদা,
কয়ঁগেন্নগা। পান্নন্নান্নাদা কা।ন্ন ঢ়ম্মদা। কেয়ঃম্মঘ গান্নম্মান্নেগেন্নাদা,
গান্নপয়ঘকদা। ঘকেকেঘকদকদা। ৱেকম্মান্না কেঢ়গেন্নগা। দগ কেঢ়ঃকেঢ়কেগেন্নাদা,
ৱেদা। গয়ম্মান্নয় ন্নান্নকেঢ়ন্নান্ন গয়দদা। ৱেন্নে গান্নম্মান্নেগেন্নাদা.

য়ন্নন্নান্না য়ন্নন্না। ঙান্ন লা।কেগেন্নাদা,
ঙা।ঃপান্না ঙা।ঃপা। ঙান্ন লা।ঃকেগেন্নাদা,
ঘলকান্ন পান্নম্মঙ-পান্নকদকা। ম্মেঘ গেঢ়গেঢ়ক ঙান্ন দান্নগেন্নাদা,
ঘলকান্ন য়কদলেঢ়দা কেঢ়কেগেন্নাদা,
ঘলকান্ন পৰীঃগ ৱেদা। ৱেন্নয়া,
কা।ন্ন পয়পপা। ন্নঢ় ঙয়ঃন্নঢ় দগ কান্নঢ়,
ঘলকান্ন পয়কেয়ন্ন কান্ন লান্নম্মা।দা এ। ঢ়ঁা।ঢ়য়ঢ় দগ কান্নঢ়,
ঘলকান্ন পান্নম্মঙ-পান্নকদান্নক ঙান্নলকেঢ় য়কদাঁন্ন ৱেদা। লান্নদম্মদা। য়কদাঁন্ন

6. असम ता पचगी कुँडुख़न

— सय प्रबोध टोप्पो, असम

एःन असम ता पचगी कुँडुख़न,
एंगहय देश नुम एंगहय चिन्हा–परचा मल्ला,
एंगहय राःजी नुम एंगहय दरजा मल्ला,
एःन एकासे तेंग्गोन, एकासे तिखिड़'ओन,
एःन असम ता पचगी कुँडुख़न।।

असम गे एन्देर मल चिच्चकन,
ई राजी गे एन्देर मल नंजकन,
निमन मेनत'आ लगदन, बरा मेना ।।

चाबुवा नूं चाय ख़ोप्पा ईद'ओ बीरि,
एन एंगहय सांवसे सावंग ती,
ख़ेंवचा गे पोलना बेसे,
कोंहां–कोंहां मन्नन टिड्डकन,
मन्न ही कुकुड़ान चड्डकन,
टका–टुकून, टुंगरिन, भदड़ान, परता कारेघान,
झुरनी कान्तो ती झोड़कन,
गड्डी–डिप्पान टोगं'ए–कुड्डी ती सम्म नन्जकन,
टोंक्कन–ख़ल्लन चाय ईदना जोःगे कमचकन,
कपड़े ता एंरचेर्रका अम्मन डिक्का नूं चिंचिरकन,
अरा सुन्दर हरीयर सोना असम कमचकन।।

उल्लन उल्ला मल बुझुरकन,
माःख़न माःख़ा मल घोखोचकन,
एंगहय ख़द्द–ख़र्रारिन फिकिर माल नन्जकन,
एंगहय उरमिन चिच्चकन,
एंगहय ख़ेस अरा अहड़ा
चाय ख़ोप्पा ही मूली नूं र'ई,
एंगहय ख़ोचोल चाय बगान ता पँईड़ी नूँ र'ई,
एंगहय ख़द्द–ख़र्रार मंगरी उराँव अरा बन्धना उराँव
जिया–कया र'अना गूटी असम राःजी गे लड़चर।।

2006

782139

8638042240

24 नबम्बर 2007 नूं एंगदा लछमी बाख़लान (उरांव)
गुवाहाटी ता बेलतला नूं थोथा नान्जर,
अदी ही लज्जेन सँवसे ख़ेख़ेल नूं बीसियार,
अन्नु हूं असम सरकार रोट'ओ मला लज्जरा,
भारत सरकार हूँ मल चिच्चा नेयाय अरा निसाब,
इदी ती बग्गे आउर एकासे तेंग्गोन,
एःन असम ता पचगी कुँडुख़न।।

दव किचरी–डोड्डो मल कूरकन–पोजोरकन,
दव ओन्ना–मोःख़ना मल ओण्डकन–मोक्कन,
बिही रोगे बाःरी दव मंदर मल ख़इक्कन,
नेःकन हूं मल तेंगेरकन,
बई मल खोलोचकन, छछेम रईह केरकन,
उरमिन सहचकन, जाकोन झेलेचकन,
आजादी हुलहुली नु एःन हूँ संग्गे मंज्जकन,
अन्नु हूँ एंगगन बअ़नर नीन मईलदय इसता आदिवासी,
ओहरे ! एःन असम ता पचगी कुँडुख़न।।

एन्देर ननोन, एवन्दा बओन,
एंगहय जिनगी गा केरा, कट्टिया,
पहें नत्ती नतियर गे जिया चींःख़ी–ओलख़ी,
दरा छछेम बअ़ई, धरमेस गही दोवा,
धरती अयंग गही अंचरा अरा असरा,
पुरखर गही भरसा, बाःचर अरा बरजाःचर,
ननोय होले ओनोय, ओक्कोय होले ख़क्खोय,
बरना बेड़ा गे तेयार मना, लूर धरआ,
टूःड़ा बचआ, लूरगर मना अरा नना ओना।।

पद्दा – चिलिमखोवा
पो/ओ – बरजुरी 782139
जिला – नगांव असम
फोन नं – 8638042240

7. [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

*****

7. चा बागान ता श्रमिकर ही दर्द भरी जुबान

– सय यूजिन टोप्पो, सिलिगुड़ी, प0 बंगाल

चा बागान कमआ गे तीन मसिया छौ मसिया ओंदरर अंगरेजर,
चा खोप्पा ही मूली नु रअ़ई अयंग बंग्गर ही हाहाकार।
शोषण अरा अत्याचार ही कत्थन बरा मेना अरा बुझुरआ –
माःनीम – पुरखर झाड़, जगंलन सफा नंज्जर,
ताःका–फुली – बईरबण्डो – बिड़ना – चेंःप – पंईय्यॉ सहचर,
लकड़ा – नेर्र – खखरबिछा ती पछरा बिच्चयर,
हैजा – कोलेरा – मलेरिया ती चन्दो–चान लड़चर,
हल्ले खेखेल मइइयाँ, उल्ला–माःखा जिनगिन बिताबाःचर।
पन्ना ही थरा नू कन्दा – ख़ंजपा – पोचगो मोंःख़र,
अग्रेंजर –मालिकर –ठेकेदार ही माउर मोक्खर
ख़ेःख़ेल पलिकयर ती हरियाली चा बागान कमचर ।

चा अतख़ा नू नुख़ूरकी रअ़ई चा श्रमिकर ही नुंजना ससईत ख़ीःरी,
एकसन, उल्ला–माःख़ा ही सेवा ती पुरा मनी उज्जना ही अरमान,
एंवदा बरचा मुसीबत – एंवदा बरचा तूफान,
चाह तोक्खनुम – उमईर बीत्तरा – डटअर रहचर असानुम
इन्ना गूटी मा मन्जा आर गही ख़द्द–ख़र्रार ही दर्द गही दफन।
मजदूर हिकनर मजबूर रअ़नर कुक्क नू हेचकानर कफन।

चा ही अतखा दुनियाँ नू बीसिर'ई – ओन्द प्याली ती ओन्दोर'ई ! मुस्कान,
अन्नू हुं चा श्रमिकर गे मा ख़खर'ई दःव अम्म, दवाई अरा राशन।
एकअम बीःरी तंमहय अधिकार गे आवाज उठा बअ़नर ,
मालिक – प्रबन्धक गर ही लॉकआउट ती चा बागानन नन्नर चिअ़नर वीरान,
मा चिअ़नर धेयान – मंत्री, नेता गुट्ठीयर अरा सरकारी कोंहा आःलर,
सिरिफ ननरर शोषण अरा शासन।
विद्यार्थीर ही स्कूल अम्बर'ई काःली, बन्द मनी होले चा बागान।
कूल–कीड़ा ती एंवदा अलार ही काःली जान, एंवदा अलार मन्नर पलायन ।
एंवदा परिवार मनी काःली विस्थापन।
एन्ने मनी कोड़ा राःजी ही चा बागान ।

ई चा बागान ती पढ़चर–लिखचर अरा मंजर कोंहा सेयान,
कोहां मंत्री – नेता ,– अगुवा अरा ऑफिसर महान,
पहें ! इन्ना मन्जर केरर चा बागान ती दरकिनार।
एका लेखा बोंग्गो चा बागान ती अंधकार,
श्रम गही पुजारिर ही ऊःहा जिनगी नू मल्ला बिल्ली अरा रम्फ,
त्याग – मेहनईत ती हूँ मना पोल्ला सोहान,
ईदिम हिके चा श्रमिकर ही दर्द भरी जुबान।

*****

8. डण्डा कट्टना / पल्ल काँसना / भेलवाफड़ी / भाख खण्डना नेःत–नेःग अरा चिनहाँ

शोध एवं संकलन – डॉ० नारायण उराँव ''सैन्दा''

डण्डा कट्टना / पल्ल काँसना / भेलवाफड़ी / भाखखण्डना एक धार्मिक अनुश्ठान है। इस अनुश्ठान में एक वि ोश प्रकार का चिन्ह बनाया जाता है जिसका नाम उरोक्त अनुश्ठान के नाम से जाना जाता है। इस अनुश्ठान को कुँड़ुख़ (उराँव) आदिवासी जन्म, मरण, भाादी–ब्याह, बीज बोने से पहले, धान काटने के बाद, धान रोपनी के समय, संकट की घड़ी में, तथा दुःख बीमारी से निजात पाने हेतु तथा धन–दौलत, सेंस–बराकइत हेतु समय–समय पर किया करते है। यह एक पारिवारिक तथा सामुहिक अनुश्ठान है। इसमें, पुजारी के अलावे कम से कम पाँच व्यक्तियों का होना आव यक माना जाता है। किन्तु इस अनुश्ठान चिन्ह के बीच में अंडा रखा हुआ चिन्ह के साथ, में ध्यान लगाकर मन, वचन और कर्म से प्रतिदिन नहा–धोकर घड़ी की विपरीत दि ाा में धूप अगरबत्ती दिखाया जाय तो आत्मिक भाांति और सुख मिलता है। ग्रह – संकट दूर हो जाते हैं। भूत – पि ाच नजदीक नहीं आता है। बिगड़ा हुआ काम बनने लगते हैं। सेंस–बराकइत बढ़ता है तथा भाारीरिक एवं मानसिक सुख मिलता है, जिसके चलते आध्यात्मिक सुख और भाांति मिलता हैं।

"डण्डा कट्टना" एक कुँड़ुख़ भाब्द है। डण्डा का अर्थ अवरोध, लाठी होता है। कट्टना का अर्थ पार करना। इस प्रकार डण्डा कट्टना का अर्थ वैसे अनुश्ठान से है जो किसी भी अवरोध को पार करा सके, ग्रह – संकट को दूर कर सके तथा भवसागर को पार करा सके।

"पल्ल कांसना" भी एक कुँड़ुख़ भाब्द है। पल्ल का अर्थ दाँत तथा काँःसना का अर्थ सँवारना होता है। इस प्रकार पल्ल कांसना का भााब्दिक अर्थ दांतों को संवारना है। यहाँ दाँतों को संवारने का अर्थ, वैसे अनुश्ठान से है जो जीवन में खु ाी ला सके। जिस प्रकार वगैर दाँत के व्यक्ति का जीवन कठिन हो जाता है, ठीक उसी प्रकार मानव जीवन में भी धार्मिक अनुश्ठान के रीति–रिवाज के वगैर मानव समाज का अस्तित्व भी निरर्थक है। नागपुरी में इस अनुश्ठान को " भाखकटी " अथवा "भेलवाफड़ी" कहा जाता है। मुण्डा भाशा में इसे सोसोपड़ा कहा जाता है। इस अनुश्ठान या अनुश्ठान चिन्ह को देखने में जितना सरल है, आध्यात्मिक दृश्टिकोण से यह उतना ही गहरा है।

दूसरे धर्मावलम्बियों में जिस प्रकार अपने – अपने धर्म चिन्ह होते हैं, उसी प्रकार परम्परागत कुड़ुख़ आदिवासी में भी धर्म चिन्ह यही "पल्ल कांसना नेग चिन्ह" है। इस धर्म चिन्ह का इतिहास ढूँढ पाना जरा कठिन काम है। चूंकि हम जिन चिन्हों को अपने अनुश्ठानों में प्रयोग करते है, उसे पूरे वि व का खगोल ाास्त्र इसी रूप में स्वीकारता हैं व त के अन्दर जोड़ चिन्ह का अर्थ "प थ्वी" है। इस चिन्ह के अलग – अलग अवयवों का वि ालेशण इस प्रकार है :–

1) वृत :– वृत के केन्द्र में विन्दु का अर्थ सूर्य का प्रकाश माना गया है। परम्परावादी इसे उर्जा का श्रोत मानते है। खगोलशास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र में इस चिन्ह को सूर्य के लिए प्रयोग किया गया है।

2) वृत के अन्दर जोड़ चिन्ह :– डण्डा कट्टना अनुश्ठानत चिन्ह बनाते समय सबसे पहले वृत चिन्ह बनाते है, और उसके बाद उसके अन्दर जोड़ चिन्ह बनाते हैं तथा बाद में बृत के बाहर सात अर्द्धवृत बनाया जाता है, अर्थात पूरी पृथ्वी में सात देश सात महासागर का प्रतीक। इह चिन्ह को परम्परावादी धरती का सूचक मानते है। नासा में भी वृत के अन्दर जोड़ चिन्ह को पृथ्वी ही माना गया है। खगोलशास्त्र एवं ज्योतिष शास्त्र में पृथ्वी / धरती माना गया है।

3) सात अर्द्ध वृत जो वृत के चारों ओर से घेरता हो :– आदिवासी परम्परा वि वास में सात धरती – सात समुन्दर की बातें कही जाती है। इसके अलावे सात दिन–सात रात, सात भाई सात बहन, सात दि ाा (पूरब, पि चम, उतर, दक्षिण, आका ा, पाताल, धरती) आदि मुख्य बातें हैं। आध्यात्मिक दृश्टिकोण से सात का आंकड़ा भी उपयुक्त है। गाँव के पुजारी (पहान, पूजार आदि) अपना मंत्रोच्चारण में कहते हैं – "ए दे सातो देब, सातो दुरन कोल्लके की बरके अरा उरमी काल – कटन होअके की कालके।" अर्थात – ए सातो देबी (ाक्ति) सातो दरवाजों को खोलकर

आना और सभी दुःख बीमारी को ले जाना। इस मंत्र में सात दरवाजा का अर्थ भारीर के सात छिद्र से है, जो सात तंत्र (Seven sense organ) को इंगित करता है। ये सात द्वार तंत्र हैं – आँख, नाक, कान, मुँह, चमड़ा मूत्रद्वार तथा मलद्वार। यानि पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ तथा दो कर्म इन्द्रियाँ। इसी तरह बच्चा जब मां के गर्भ में रहता है, तब आरंभिक समय में डेढ़ से दो महीने बाद ही माँ समझ पातीं हैं कि उसके गर्भ में बच्चा आ गया है और माँ अपने गर्भ में लगातार सात महीने तक बच्चे के स्प   ा को मह   ूस करती है। कठोपनिशद में यमराज और नचिकेता की कहानी के माध्यम से इस रहस्य का खुलासा किया गया है। आध्यात्म कहता है कि जब इन सभी इन्द्रियों को व   ा में किया जाय अथवा इन सभी इन्द्रिय भाक्ति को एक स्थान पर एकत्रित किया जाय तब ई   वरीय ज्ञान/ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति होती है। यही ज्ञान का प्रका   ा है। महात्मा बुद्ध को कठिन तपस्या के बाद ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। बाइबिल में कहा गया है कि मरियम मगदलिनी को ही सबसे पहले ई   ाा के स्वर्गरोहन के प   चात् ई   ा द   ाॅनि हुआ, क्योंकि ई   ाा ने मगदलिनी के भारीर से सात प्रेतात्माओं को निकाल दिया था। सात प्रेतात्माओं का अर्थ सातों इन्द्रियों को कुत्सित करने वाली भाक्ति है, अर्थात् मगदलिनी ही ई   ाा की सच्ची ि   ाश्य थी। जिन्होंने ई   ाा मसीह के आदे   ाों को सही अर्थों में आत्मसात किया। जिसके फलस्वरूप उन्हें सर्वप्रथम ई   ा द   ाॅनि होने का सौभाग्य मिला। परम्परावादी इन सात अर्द्धवृतों को सात दिनों का ग्रह – संकट, दुःख – तकलीफ, विपत्ति दूर करने का प्रतीक मानते हैं। यह सात द्वार और शरीर का पांच तत्व, कुल बारह जो बारहों महीना क्रिश्सशील होते है।

4) तीन रंग : (क) सफेद (बिच्ची गुण्डा/चूर्ण) :– सर्व   ाक्तिमान ई   वर का प्रतीक

(ख) काला (कोयला गुण्डा/चूर्ण) :– अनिष्ट भाक्ति को रोकने का प्रतीक

(ग) हल्का लाल (चुल्हा मिट्टी गुण्डा/ चूर्ण) :– ईष्ट शक्ति के प्रवेश कराने का प्रतीक

परम्परावादी लाल, काला एवं सफेद रंगों से ग्रह – संकट को सीमा पार किये जाने का रिवाज मानते हैं।

5) अरवा चावल : उन तमाम भाक्तियों को चढ़ाया गया भेंट जिसे मनुश्य अपनी मेहनत से तैयार करता है।

6) अण्डा : वैसा वस्तु जो न तो सजीव है और न ही निर्जीव। अंडा में एक तिहाई पीला वाला भाग semi liquid जैसा होता है तथा तीन भाग liquid जैसा होता है, जो पृथ्वी का प्रतीक है। जिस प्रकार एक ही अण्डों में से कुछ अण्डे में ई   वरीय कृपा पड़ने पर चूजा निकल आता है, तथा कुछ में कृपा न पड़ने पर अण्डा गंदा हो जाता है, उसी प्रकार मानव जीवन भी ई   वरीय कृपा प्राप्त होने एवं न होने का अलग–अलग प्रभाव पड़ता है। इसी अवधारणा के साथ ई   वर की पूजा–भक्ति की जाती है। परम्परावादी इसे ग्रह–संकट को ढोने का वाहक मानते हैं।

7) कीःरो डण्डा/भेलवा डण्टल : भेलवा एक प्रकार का पेड़ है, जिसका फल किसी व्यक्ति के लिये सुपाच्य है तो किसी के अपाच्य। यह इश्ट–अनिश्ट का द्योतक है। अर्थात ई   वरीय फलाफल इश्ट–अनिश्ट दोनों एक स्थान में मौजूद है। भेलवा दतुंन को कुडरी पटा के भाक्ल का बनाया जाता है। कुडरी पटा जिस प्रकार खेत को समतल करता है, उसी प्रकार इसे दुःख – तकलीफ को ढोने का प्रतीक माना गया है। व्यक्तिगत रूप से पूजा भक्ति करते हुए इस अनुश्ठान चिन्ह में ध्यान लगाकर कुछ इस प्रकार मंत्र पढ़ा जाता है – "ए दे धरमे, धरती अयगे, चन्दो बीःड़ी, मय्हदेव परबईत, चाःला अंयग, अरा पुरखा पचबल/पचबल आःलरो। निम्हय तिगंका –पेसका लेखअम एम नना ओना लगदन। एकअम बेसे अख़आ–बल्ला, भूल–चूक मनो अदिन ताँड़के अरा एंग्हय गरह गोचर रोग बलायन तरकुटि ननके। (अर्थात् हे सर्व   ाक्तिमान ई   वर, धरती माँ, चाँद सूर्य, मय्हदेव परबईत, सरना माइय एवं पूर्वज, आप लोगों के बतलाये गये रास्ते पर चलते हुए गुजर बसर कर रहा हूँ भूल चुक से कोई गलतियाँ हुई है जो क्षमा करना तथा हमारे सभी दुःख तकलीफ ग्रह – संकट को दूर रखना)। सामूहिक अनुश्ठान करते समय अलग तरह के मंत्रोचारण किये जाते हैं जिसका उल्लेख नहीं किया गया है।

आशय अगले अंक में ....

൯. നാ:ഴ-ൈമഴവരാ൩ നാ ൈമലയൈനാ-ലമലയൈനാ ൱ലഖ൮

ഉ ഗ൱നൈനഉ നാ:ഴ-ൈമഴവരാ൩ നാ ൈമലയൈനാ-ലമലയൈനാ ൱ലഖ,
൮ൈരഖ൩ ക൱ഗ ഗഉ:ഭൈനാ ൱ലഖ ൈനഉഭലഖാ൩ ൱ലഖ,
രമഴമല-പാരനൊ നാ രമഴഗ൩ നെ ജഭനാ ൱ലഖ,
ഉ:ച പാ൱ഭരനജ കജകരഉ ലഴഗഴ രമഴ൩ൈഗമ നാ ൱ലഖ,
ജഉ൪൫ഉ ഉ:ച ഗാ൫൩ ൱ന ഗാരാല,
ഉ ഗ൱നൈനഉ നാ:ഴ-ൈമഴവരാ൩ നാ ൈമലയൈനാ-ലമലയൈനാ ൱ലഖ,

ൈനഉഭലഖാ൩ ൱ലഖ ൱ഉ ലഴനൈയാ൱ കാരഴ നെ,
൮ൈരഖ൩ ഗാനൈഉൈനന ഗാരരെഉ,
ൈമലയനജലഖ-ലമലയനജലഖ ഭാഉ ജഭലഖഉ ശാമഉ,
൱ാ൱നൈനജലഖ ഭാഉ രമഴാല-പാരനൊ ൱ന കാരാ ൱ാരാശ,
ഗ൱നൈനഉ നാ:ഴ-ൈമഴവരാ൩ നാ ൈമലയൈനാ-ലമലയൈനാ ൱ലഖ,

നഴ:നഴ൩ നാ കാ൱നൈന-കനജ:൩ഉൈന പാരാലാഉ,
ഗ൱നൈനഉ ൱ലഖ കാരഴ നെ ൈമഗശഉ,
൱ലഖ-പാശരനാ ൱ന ലഉൈനെഉ,
൱നൈഉൈ൩ഴ നാല'ാ ഭാല-ൈമജപാ൱ ലാകാ൩ാ'ഉ.
കജകനകാഉൈഖ ഗാ:൱നജലഖ ഭാഉ ഭാൈഗഴ-ഭാൈഗഴ,
ഗ൱നൈനഉ നാ:ഴ-നൈമഗൈനാ ഴ:ഗ൱നാ ൱ലഖ.
നാനാൈഭ'ഉ ഉകഉൈഖഴ ഴഗാലാ൩ൈഭഉ ൈഭാരൈഴ,

ൈഭാരൈഴ൱ൈന ഉ ൈഭാ൩ൈഗഉ ൈരഉൈഗൈഗഉ കജരരകാഉ പാശ൱നാ,
ഗാഗൈനഉ കാ൱നൈഭാഉ ശാ൩ാ ശഉ൩പാഉൈഭ കാ൱നൈഭാഉ ഗാരരെഉ,
ഗജഗൈഗ-ഗാപഴകഴ൱ന പാരരഗാ-പാരരഗാ ൈഭഉ:നഉ ഴ൩നഉ,
കാ൱നൈഭാഉ ൈഴ൩ഗാ ജാ൩ ഗാ൩ൈഭഉ,
ഉ ഗ൱നൈനഉ നാ:ഴ-നൈമഗൈനാ നെ ഗഉൈഭഉ-ഗഉൈഭഉ ൱ലഖ,

ൈഴ൩൱നൈഗാ ൩ഴ൩ാ-ൈഭഴ൱നൈ൩ാ
നഴ:നഴ൩ ൭൩൱ കാ൱നൈഉ ലജഗാ
൱ൈഉ കാ൱നൈഉ ഉ:ച ഗഉ:ഭൈനാ ൱ലഖ
ഴ:ഗ൱നജലഖ-ൈമഴലനജലഖ ഭാഉ ൈകജകാ-ൈകജകാ,
രമഴമല-പാരനൊ നെ ൱നൈഭാ൱കാ൩ാ൩ാ ൱ലഖ
ഉ ഗ൱നൈനഉ നാ:ഴ-നൈമഗൈനാ നെ ൱നൈഭാ൱കാ൩ാ൩ാ ൱ലഖ.

– കഗ്ഗ. ഗഉനാ ഗജഖാഭൈഉ ഗഴഭഗഴരരഭാ
൭ഗഉഗരരഴൈനര ഗ്രഗഴഴഗാര, ഗൈഴജഴ
ൈനാ.ഗ൩ാഭ൩ാ ഗ്രാഗാ൱ ഖജ. രഉഗരാാഭഉ൪൱൩൩ാ൩൩൭
ഭാഗൈഉ (൩ാഭശാൈഗര)

8. ख़ाड़–ख़ोसरा ता ता चोंग्गना–बोंग्गना अम्मे

ई सन्नी ख़ाड़–ख़ोसरा ता चोंग्गना–बोंग्गना अम्मे,
एवंदा दव जिया–कया कीःरना, निरंग अम्मे,
टोड़ंग–परता ता ढोड़का ती उरूख़का अम्मे,
पंडरू दुदही बेसे उईय्यी ईद कया नु संवग,
ई सन्नी ख़ाड़–ढोड़हा ता चोंग्गना'–बोंग्गना अम्मे।

निरंग अम्म ही तेजगर धारे ती,
एवंदा गड्डिन कट्टी बर'ई,
चोंग्गनुम–बोंग्गनु र'ई ऊरमी बाःरी,
नन्नूम र'ई टोड़ंग–परता नू दव नलख,
ई सन्नी ख़ाड़–ढोड़हा ता चोंग्गना–बोंग्गना अम्म।

ख़ेख़ेल ता मन्न–मूलीन पटाब'ई,
सन्नी अम्म धारे ती चोंक्खी उरखी,
अम्म–पझरा नू बिच्ची सिरजार'ई,
अन्तिले तंगआ रंग–छाव बदलार'ई।
ई सन्नी ख़ाड़–ख़ोंसरा एःकना–तोःकना अम्म।

डहरेन नु ईजअर की छिक'ई मोहड़ा पखना,
ससती मन्नर खरा खिलपईत मन्नर कट्टी,
कुक्क–कपड़ेन पटकाच–पटकाच चींख़ी–ओलख़ी,
मानिम एवंदा दव सड्डी ख़रख़ी ख़लख़ल,
ई सन्नी खाड़–ढोड़हा ता सिरी–सिरी अम्म।

एवंदा लोला–चोन्हा,
ख़ेख़ेल अयंग गहि बुका,
अदि गहि ईद कीःरना अम्म,
एःकनुम–चोंग्गनुम र'ई जुगा–जुग,
टोड़ग–परता ता निरामला अम्म,
ई सन्नी खाड़–ख़ोसरा ता निरामला अम्म।

– डॉ० सीता कुमारी केरकेट्टा
सहायक प्राध्यापक (अनुबंध), कुँड़ुख़ विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची।

ᱹ. ᱱᱟᱜᱜ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ

ᱵᱚᱻᱥᱮᱛ – ᱢᱮᱫᱣᱯᱹᱰᱟᱛ ᱮᱛᱚᱰ

ᱫᱯᱛᱞᱮᱻᱚ ᱚᱣᱸᱞᱭᱟᱛ ᱛᱟᱨᱚᱤ, ᱱᱟᱜᱜ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ,
ᱞᱣᱻᱚᱫᱮᱭ ᱫᱮᱞᱫᱮᱭ ᱢᱮᱛᱮᱛᱢᱮᱫᱚ ᱜᱮᱻᱵᱯ ᱫᱮ,
ᱵᱟᱫᱥᱚ ᱵᱟᱭᱭᱫᱚ ᱟᱨᱚ ᱵᱟᱛᱭᱚ ᱫᱟᱥᱟᱛᱫᱚ,
ᱞᱟᱚ ᱫᱟᱥᱟᱛᱫᱚ ᱟᱨᱚ ᱞᱤᱞᱤᱛ ᱫᱟᱥᱟᱛᱫᱚ,
ᱚ ᱱᱟᱫᱣᱭ ᱵᱟᱭᱭᱚᱫᱟᱥᱟᱛᱫᱚ, ᱚ ᱱᱟᱫᱣᱭ ᱛᱟᱵᱨᱚ ᱭᱟᱫᱫᱚ,
ᱤᱨᱛᱣ ᱢᱟᱵᱚ, ᱥᱯᱛᱛ ᱞᱟᱛᱽᱚ ᱫᱣᱥᱽᱟᱫ ᱱᱟᱜᱜ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ. ॥ᱹ॥

ᱫᱟᱫᱱᱚ ᱞᱣᱥᱚ ᱫᱟᱫᱱᱚ ᱭᱤᱻᱱᱚ, ᱚᱟᱸᱞᱮ ᱞᱣᱥᱚ ᱚᱟᱸᱞᱮ ᱭᱤᱻᱱᱚ,
ᱥᱟᱭᱥᱚ ᱞᱣᱥᱚ ᱥᱟᱭᱥᱚ ᱟᱨᱚ ᱚᱟᱨᱮ ᱞᱣᱥᱚ ᱚᱟᱨᱮ,
ᱞᱟᱥᱚ-ᱵᱟᱥᱛᱯ, ᱵᱚᱫ ᱭᱣ ᱯ ᱱᱟᱜᱜ ᱚᱯᱞᱚ ᱚᱤᱵᱥᱚᱛᱽᱯ,
ᱵᱟᱞᱚ ᱛᱟᱵᱟᱞ ᱭᱟᱵ ᱛᱟᱫᱮ ᱨᱮᱸ ᱵᱟᱫᱟᱱᱥᱯ ᱛᱟᱚ ᱵᱟᱭᱯᱞᱚ ᱱᱟᱢᱚᱵᱚ ᱫᱮ,
ᱥᱮᱸᱜᱨᱚ-ᱥᱮᱸᱜᱨᱚ ᱱᱟᱜᱜᱟᱛ ᱞᱤᱞᱤᱛ ᱫᱮᱞᱭᱤᱛ ᱭᱟᱫᱫ ᱥᱯᱞᱞᱚ,
ᱤᱨᱛᱣ ᱢᱟᱵᱚ, ᱥᱯᱛᱛ ᱞᱟᱛᱽᱚ ᱫᱣᱥᱽᱟᱫ ᱱᱟᱜᱜ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ. ॥ᱹ॥

ᱚᱤᱚ ᱵᱟᱯᱛᱯ ᱟᱞᱟᱞ-ᱞᱟᱞᱚᱛᱯᱫ ᱚᱯᱸᱻᱱᱟᱛ ᱣᱵᱣᱭᱚᱚᱫᱚ,
ᱭᱤᱻᱱᱚ ᱭᱣ ᱱᱟᱥᱥᱛᱚ ᱞᱮᱥᱮᱞ ᱵᱣ ᱱᱟᱜᱜ ᱥᱤᱫᱜᱨᱚ,
ᱭᱮᱵᱮ ᱚᱮᱵᱮ, ᱭᱮᱵᱮ ᱚᱮᱵᱮ, ᱵᱤᱢᱚᱞᱟᱟᱛ ᱜᱟᱛᱚ ᱭᱤᱻᱱᱫᱚ,
ᱣᱞᱭᱚ ᱨᱮᱸ ᱭᱤᱻᱱᱚ ᱭᱣ ᱚᱯᱚ, ᱛᱟᱞᱯᱞᱟᱛ ᱭᱟᱨᱯ ᱞᱟᱫᱚ,
ᱛᱟᱨᱚ ᱨᱤ, ᱣᱻᱫ ᱨᱮᱸ ᱭᱟᱵ ᱚᱯᱚᱤᱫ, ᱥᱚᱻᱵᱤᱛ ᱵᱣᱻᱚ ᱣᱭᱞᱟᱛ ᱨᱤᱵᱣ,
ᱤᱨᱛᱣ ᱢᱟᱵᱚ, ᱥᱯᱛᱛ ᱞᱟᱛᱽᱚ ᱫᱣᱥᱽᱟᱫ ᱱᱟᱜᱜ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ. ॥ᱹ॥

ᱥᱚᱻᱵᱚ ᱵᱟᱯᱥᱥᱟᱭ ᱫᱤᱞᱛᱯ ᱚᱟᱛᱚ ᱣᱻᱥᱚ ᱱᱚᱻᱵᱚ ᱣᱭᱞᱟᱛ ᱭᱟᱫᱣ,
ᱚᱯᱚᱯᱛ-ᱭᱮᱫᱚᱛᱯ, ᱨᱣᱫᱣᱫᱣᱵᱚᱸ ᱞᱯ ᱞᱣᱜᱚ ᱵᱟᱯᱥᱥᱟᱭ,
ᱵᱤᱻᱛᱽᱚ ᱵᱟᱯᱥᱥᱟᱭ ᱭᱟᱣᱫᱚ, ᱱᱚᱻᱱᱚ ᱟᱨᱚ ᱵᱸᱟᱥᱥᱯ ᱤᱻᱥᱚ,
ᱵᱟᱭᱭᱤ ᱥᱯᱻᱥᱚ ᱫᱮᱞᱛᱯ ᱚᱟᱛᱚ, ᱨᱤᱵᱣ ᱚᱟᱥᱽᱤᱛ ᱣᱭᱞᱟᱛ ᱚᱟᱫᱚᱯ ᱵᱚᱻᱥᱚ,
ᱮᱫᱚᱮᱛ ᱭᱣᱸ-ᱭᱣᱸ ᱜᱮᱜᱨᱯ ᱚᱯ, ᱣᱻᱥᱚ ᱱᱚᱻᱵᱮᱛ ᱭᱣ ᱵᱯᱥᱯᱫ ᱚᱯ,
ᱭᱤᱜᱤᱛᱽᱚ ᱵᱟᱯᱥᱥᱟᱭ ᱭᱣᱫᱟᱛ ᱥᱯ ᱚᱟᱫᱚᱯ ᱤᱫᱥᱟᱫ ᱟᱨᱚ ᱥᱯᱻᱥᱟᱫ,
ᱤᱨᱛᱣ ᱢᱟᱵᱚ, ᱥᱯᱛᱛ ᱞᱟᱛᱽᱚ ᱫᱣᱥᱽᱟᱫ ᱱᱟᱜᱜ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ. ॥ᱹ॥

ᱱᱟᱜᱜ ᱚᱯ ᱚᱤᱥᱥ ᱵᱟᱛᱟᱜᱫᱚ ᱭᱟᱢᱚᱚ ᱥᱤᱛᱟᱚᱥᱟᱭ ᱚᱣᱥᱚ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ,
ᱟᱞᱤ ᱭᱟᱨᱯ ᱥᱣᱞᱣᱛᱫᱚ ᱟᱨᱚ ᱞᱟᱞᱟᱛ ᱭᱟᱨᱯ ᱫᱣᱭᱵᱚ ᱱᱟᱥᱟᱛᱽᱚ ᱨᱣᱵᱵᱛᱚ,
ᱣᱥᱚ ᱮᱵᱵᱚ ᱚᱯ ᱫᱮᱻᱥᱚ-ᱞᱟᱚᱽᱚ ᱭᱣ ᱥᱚᱻᱵᱤᱞ ᱨᱤ ᱵᱟᱚᱭᱯ, ᱵᱮᱛᱥᱮᱥᱯᱞᱚ,
ᱥᱚᱻᱫᱟᱛ ᱱᱟᱜᱟᱛ ᱛᱟᱞᱣ-ᱛᱟᱞᱣ ᱫᱮᱻᱥᱚ-ᱞᱟᱚᱽᱚᱭᱣ ᱞᱟᱚᱥᱮᱥᱯᱞᱚ,
ᱫᱮᱻᱥᱤᱞ-ᱞᱟᱚᱽᱤᱞ ᱨᱤᱵᱣ ᱭᱟᱫᱤᱞ ᱨᱮᱛᱞᱚᱛ ᱭᱟᱥᱵᱣ ᱭᱟᱫᱤᱞ ᱞᱣᱵᱮᱛᱞᱚ,
ᱫᱟᱫᱤᱞ ᱫᱤᱥᱛᱯ-ᱚᱟᱥᱛᱯ ᱞᱟᱚᱽᱤᱞ ᱨᱤᱵᱣ ᱤᱥᱥᱤᱞ ᱫᱯᱻᱫ ᱥᱮᱛᱛᱯ ᱟᱨᱚ ᱭᱟᱚᱯᱞᱚ,
ᱛᱯᱥᱯᱛᱽᱟᱛ ᱛᱯᱥᱚᱞᱟᱤᱞ ᱥᱮᱸᱥᱨᱚ ᱚᱚ ᱫᱣᱻᱭ ᱚᱚᱻᱵᱤᱫ, ᱭᱟᱫᱤᱞ ᱨᱤᱵᱣ ᱵᱮᱛᱭᱟᱛᱯᱞᱚ,
ᱤᱨᱛᱣ ᱢᱟᱵᱚ, ᱥᱯᱛᱛ ᱞᱟᱛᱽᱚ ᱫᱣᱥᱽᱟᱫ ᱱᱟᱜᱜ ᱵᱟᱛᱯᱞᱚ. ॥ᱹ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥2॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥2॥

9. ख़द्द परिया
पाःडुस – भुनेश्वर उराँव

निरबुझ चेंठगर रहचा, ख़द्द परिया,
बेःचनुम नूङनुम भुसुर–भुण्ड धूली नू,
पटका लग्गना अरा परमा नखरना,
बच्च्य नखरना अरा बोङोर नखरना,
आ ख़नेम लग्गानखरना, आ ख़नेम सलहा मन्ना,
ओहरे भला, किर्र बरआ नेकअन ख़द्द परिया। (2)

टटख़ा बेड़ा टटख़ा मोःख़ा, जम्मबू बेड़ा जम्मबू मोःख़ा,
कठड़ा बेड़ा कठड़ा अरा डहू बेड़ा डहू,
बड़ा–पकरी, पान गे ई ख़द्द जिया,
पया सवङ मल रअ़नु हुँ लटख़की रआ लगिया ख़ंज्जपा नु,
खोंदहा–खोंदहा ख़द्दर बोङगोर।–नूङगोर मन्न किय्या,
ओहरे भला, किर्र बरआ नेकअन ख़द्द परिया। (2)

चोआ पइरी अयङ–बङ्गारिन चीःख़र एलेगताअना,
मोःख़ा गे ख़क्खरा भुडुङ ले ख़द्द खोन्दहा,
गुलु चुपु, गुलु चुपु , लोभाबअर दरा मोःख़ना,
एङगा हुँ मोःख़ा गे चिआ, संङियर गही बअना,
रहा हो, एःन हुँ मल चिओन, काःलोस पेःठ एम्मबस होले,
ओहरे भला, किर्र बरआ नेकअन ख़द्द परिया। (2)

काःला लइक्कम टुङरी तरा एःड़ा ख़ाःपा एम्मबस गने,
तितिर–गुण्डरी, हेटेटेवाँ बी बेद्दा लइक्कम,
पोसआ लइक्कम मैना, ख़ाःख़ा अरा पँड़की ओःड़ा,
लग्गो कीःड़ा टुङरी तरा, होले ठकआ लगियस एम्मबस डण्डी पाःड़ा,
उण्डुर में–में, दुदही ची, एःड़ा ख़ापुस गे लिड़िन ची,
मोधोरआ लइक्कम मेनर की डण्डी ओनकन अरा कीःड़न,
ओहरे भला, किर्र बरआ नेकअन ख़द्द परिया। (2)

ख़द्द ती थोड़ेक परदना मंज्जा कोरोचकम चेंड़ा परिया,
अयो गही केबेरना अरा बबस गही टेम्पा ख़खरआ लगिया,
एका उल्ला ती टूःड़ा–बचआ गे काःलोय हो पचगी, लूरकुड़िया,
काःनर ख़द्दर संग्गे–स्रंग्गे टूःड़ा–बचआगे बचकुड़िया,
टूःड़ोय–बचओय होले मनोय हुसयार मखले मनोय बेलूरया,
ननोय नुकरी–चकरी बचओय होले, ओक्कोय नीःन कुरसी अरा मचिया,
सिखिरअर सिखाबओय खोड़हा ता नेःग चाःलोन, मनोय होले लूरगरिया,
ओहरे भला, किर्र बरआ नेकअन ख़द्द परिया। (2)

एःड़ा गही ख़ेसेर ता जोःड़ा लेखआ रहचा एङहय दसा,
ख़ेःनदर की होअ़दस एःड़न, बीःसा गे एःड़ा एड़बुस,
आ लेखआ एम्मबस घिसयाअ़ते अँड़सताचस लुरकुड़िया,
अन्तिले लूरकुड़िया गही जोःड़ा नू हेःरस केरस ख़द्दस,
लुरकुड़िया नु लुरगढ़ियस गही टेम्पा अरा एड़पा नु बबस ही,
ओहरे भला, किर्र बरआ नेकअन ख़द्द परिया। (2)

अक्कू उल्ला गइनका एम'अर ख़जर'अर लूरकुड़िया,
लअ़नन एलचर लूरकुड़िया अरा बचनन एलचर एड़पा,
जिया मल लग्गिया लूरकुड़िया नु,
लक्की रहचा बेःचना अरा मोःख़ना,
ननो तो ननो एन्देर ई ख़द्द जिया,
ओण्डकम–मोक्कम टटख़ा अरा जम्मबू,
पहें बचना मनी मैंगो अरा ब्लैक बेरी, औंगे,
टूड़ना–बचना मनो अक्कु हिन्दी, अंगरेजी अरा कुँड़ुख़ (2)

कत्थडण्डी टूःड़ुस :–
सय भुनेश्वर उराँव
शोधार्थी – कुँड़ुख़ भाषा, जनजातीय एवं क्षेत्रीय
भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।
मो० – 9931202070

10. बुदो उराँव पब्लिक स्कूल, हहरी (कुँड़ुख़ इंग्लिस मिडियम स्कूल) में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

दिनांक 15 नवम्बर 2022 दिन मंगलवार को बुदो उराँव मॉडर्न पब्लिक स्कूल, महुगाँव मोड़ हहरी, घाघरा, गुमला में झारखण्ड स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर वार्षिक खेल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। विद्यालय के प्राधानाध्यापक श्री रामवृक्ष किण्डो द्वारा प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। विद्यालय के सभी छात्रों को चार समूह – 1. वीर बुधू भगत समूह 2. सिनगी दई समूह 3. कार्तिक उराँव समूह 4. बिरसा मुण्डा समूह में बाँटा गया। प्रतियोगिता में कई प्रकार के खेल – फुटबॉल, कबड्डी, खोखो, बंदर रेस, जलेबी रेस, मेंढक रेस, झण्डा रेस, दौड़ प्रतियोगिता, मुर्गा लड़ाई खेल आदि खेलों का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में कार्तिक उराँव समुह सबसे अधिक अंक लाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरे स्थान पर सिनगी दई समुह, तीसरे स्थान पर बिरसा मुण्डा समुह, चौथे स्थान पर वीर बुधू भगत समूह रहा। इस स्कूल में नर्सरी से 10 कक्षा तक की पढ़ाई होती है। यहाँ भाषा विषय के रूप में हिन्दी, अंगरेजी एवं कुँड़ुख़ भाषा (तोलोंग लिपि में) की पढ़ाई होती है। इस वार्षिक खेल प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि श्री गजेन्द्र उराँव, सदस्य, कार्यकारिणी समिति, अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची ने बच्चों को सबोधित करते हुए कहा कि खेल हो या पढ़ाई चाहे कोई भी कार्य हो, लगन के साथ कार्य करने से सफलता जरूर मिलती है। प्राधानाध्यापक श्री रामवृक्ष किण्डो ने छात्रों को जीत की बधाई दी और आगे अच्छा करने के लिए उत्साह बढ़ाया। प्रतियोगिता में विशिष्ट अतिथि श्री मटकु उराँव, पड़हा देवान, 22 पड़हा परम्परागत ग्राम सभा बिसु सेन्दरा, सिसई–भरनो ने बच्चों का मनोबल बढ़ाया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में श्री जितराम उराँव, श्री बुधेश्वर उराँव एंव स्कूल के छात्र–छात्रों के अभिभावक गण उपस्थित थे।

11. धुमकुड़िया महबा उल्ला (धुमकुड़िया गौरव दिवस) का आयोजन

दिनांक 05.02.2023 दिन रविवार को थाना सिसई, जिला गुमला के ग्राम सैंदा में धुमकुड़िया महबा उल्ला (दिवस) का आयोजन किया गया। इस आयोजन में गाँव के देबीगुड़ी (देवी मां) में छोटे छोटे बालक–बलिकाओं को विधिवत पूजा अर्चना करा कर धुमकुड़िया में प्रवेश दिलाया गया। वहीं शादी का रिश्ता तय हुआ लड़का श्री ऋषभ उरांव को धुमकुड़िया से बिदाई किया गया, जो वर्तमान में इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं । इस अवसर पर कानून विषय के असिस्टेंट प्रोफेसर, लॉ युनिवर्सिटी, रांची के श्री रामचंद्र उरांव ने कहा कि – धुमकुड़िया, हमारे कुँडुख समाज का पहला स्कूल का केंद्र है। उन्होंने कहा कि आदि काल से ही कुँडुख समाज के लोग धुमकुड़िया के माध्यम से समाज के लोगों को अच्छे जीवन जीने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षा देते थे। आज के समय में हमारे समाज के सभी गाँव में धुमकुड़िया केंद्र खोलने की जरूरत है। वहीं पर बाहर आये अतिथियों में से पूर्व मंत्री श्रीमती गीताश्री उरांव स्वागत करने वाले गांव वालों के साथ देवी मड़ई स्थान तक पहुंच कर सामुहिक पूजा में ामिल होने के बाद बच्चों को आशीर्वाद देकर वापस हुईं। इस धुमकुड़िया महबा उल्ला (दिवस) में उपस्थित तोलोंग सिकि (लिपि) के निर्माता तथा सैन्दा गांव निवासी डा नारायण उरांव ने कहा कि आज के दौर में सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू किया जा रहा है। इसके पाठ्यक्रम मैं हिन्दी, अंग्रेजी एवं मातृभा ा शिक्षा है। इसके अनुसार हमारे समाज के लोगों को अपनी भा ा संस्कृति की शिक्षा धुमकुड़िया के द्वारा ही संभव है, क्योंकि 4 से 6 व ॅ के बच्चों को आंगनवाड़ी केंद्र में जोड़ने से बच्चों के लिए कई बातों में कठिनाई होगी। क्योकि आंगनवाड़ी में बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं, जहां कुँडुख भा ा या लिपि नहीं जानते हैं। इस लिए प्रत्येक गाँव में पारंपरिक धुमकुड़िया केंद्र खोलने की जरूरत है। इस अवसर पर विभिन्न कुँडुख भा ा लिपि शिक्षण सेंटर के शिक्षकों के बीच कुँडुख टाईम्स के अंक 4 के बिसुसेंदरा विशे ांक और अंक 05 के धुमकुड़िया विशे ांक, चिंचो डण्डी अरा ख़ीःरी पुस्तक का वितरण किया गया। इस आयोजन में सैन्दा गांव बेटी डा. श्रीमती बैजयंती उरांव, गृह विज्ञान में में उच्च शिक्षा अर्थात पी.एच.डी. प्राप्त हैं और वर्तमान में उच्च विद्यालय में में शिक्षिका हैं ने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत विद्यालयों में मातृभा ा को प्राथमिकता दी जा रही है। इसलिए धुमकुड़िया में भा ा–लिपि का पठन–पाठन बच्चों के लिए बेहतरीन अवसर है। कार्यक्रम के अंत में सभी सामुहिक भोजन में ामिल हुए। धुमकुड़िया सैन्दा सुसर संगोठ के संचालक सदस्य श्री उमेश उरांव, पाथो उरांव, घखुल उरांव, जुगेश पहान, श्रीमती झेबा उरांव, मंगरा उरांव, श्री जुगेशवर उरांव को अद्दी अखड़ा की ओर से आदिवासी गमछा देकर सम्मानित किया गया। इस धुमकुड़िया गौरव दिवस में पड़हा कोटवार श्री गजेंद्र उरांव, सेवा निवृत्त शिक्षक श्री धुमा उरांव एवं सैन्दा गांव के बच्चे बच्चियां तथा बुजुर्ग उपस्थित थे।

रिपोर्टर – सुकरू उरांव, शिवनाथपुर, सिसई, गुमला (झारखण्ड)

12. कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह समारोह दिवस गुमला जिला 2023

दिनांक 12/02/2023 दिन रविवार को गुमला जिला के सिसई थाना के अंतर्गत थाना परिसर के सामने अवस्थित केन्द्रीय सरना स्थल पर एक दिवसीय कुंड़ुख़ भा ाा तोलोंग सिकि सप्ताह दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह का आरंभ शहीद लोहरा उरांव की प्रतिमा पर मल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम में टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर का बैनर तले परेड एवं जुलूस के साथ अतिथियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर तोलोंग सिकि लिपि के संस्थापक डॉ नारायण उरांव, कुंड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा भगीटोली डुमरी गुमला के कुंड़ुख इंग्लिश मीडियम स्कूल के संस्थापक डॉ एतवा उरांव, पूर्व शिक्षा मंत्री श्रीमती गीताश्री उरांव, सिसई प्रमुख श्रीमती मीना देवी, पूर्व प्रमुख श्रीमती शनियारो उरांव तथा कुंड़ुख भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र के शिक्षक छात्र उपस्थित थे। अतिथियों में से पूर्व मंत्री श्रीमती गीताश्री उरांव ने कहा कि आदिवासी समाज में शिक्षा के साथ भाषा संस्कृति को बचाने के लिए भी कार्य करना होगा। तोलोंग सिकि के सर्जक डा नारायण उरांव ने कहा कि आज के दौर में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा रा ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू किया जा रहा है, जिसके तहत पाठ्यक्रम मैं हिन्दी, अंग्रेजी एवं मातृभा ाा शिक्षा शामिल है। अब आदिवासी समाज के लोगों को अपनी भाषा संस्कृति की रक्षा हेतु धुमकुड़िया को फिर पुनर्गठित करना होगा, क्योंकि 4 से 6 वर्ष के बच्चों को सरकार आंगनवाड़ी केंद्र में जोड़ने की बातें कर रही है। ऐसी स्थिति में बच्चों को कई बातों में कठिनाई होगी, क्योंकि आंगनवाड़ी में बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं, जहां कुँड़ुख भाषा या लिपि नहीं जानते हैं। इसलिए प्रत्येक गाँव में पारंपरिक धुमकुड़िया को जगाना होगा और बच्चे धुमकुड़िया से लूरकुड़िया यानी स्कूल की ओर बढ़ेंगे तो भाषा संरक्षण का कार्य अपने आप होने लगेगा। इस कार्यक्रम में टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर द्वारा संचालित कुँड़ुख भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केंद्र के पाँच सेंटर क्रमवार 1. बीर बुधूभगत कुँड़ुख लूरकुड़िया, सैन्दा टोली, सिसई 2. कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, मंगलो सिसई 3. कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, निजमा, सिसई 4. कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ विद्यालय, छारदा, सिसई 5. बुदो उराँव मोडर्न पब्लिक स्कूल, हहरी, घाघरा 6. कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी द्वारा अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर के सहयोग से प्रकाशित, कुँड़ुख टाईम्स पत्रिका का अंक 4, बिसुसेंदरा विशेषांक और अंक 05, धुमकुड़िया विशे ांक एवं चिंचो डण्डी अरा ख़ी:री पुस्तक का वितरण किया गया। इस आयोजन में भाषा शिक्षण केन्द्र में से 10 केन्द्र शामिल थे। कार्यक्रम के अंत में सभी लोग सामुहिक भोजन में शामिल हुए। इस आयोजन में धुमकुड़िया सैन्दा सुसर संगोठ के संचालक सदस्य श्री उमेश उरांव, पाथो उरांव, घखुल उरांव, जुगेश पहान, श्रीमती झेबा उरांव, मंगरा उरांव, श्री जुगेशवर उरांव शामिल थे।इस कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि दिवस में पड़हा कोटवार श्री गजेंद्र उरांव, सेवा निवृत्त शिक्षक श्री धुमा उरांव एवं अनेकों गांव के बच्चे बच्चियां तथा बुजुर्ग उपस्थित थे। रिपोर्टर – सुकरू उरांव शिबनाथपुर, सिसई, गुमला।

13. कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह समारोह दिवस लोहरदगा जिला 2023 सम्पन्न।

दिनांक 19/02/2023 दिन रविवार को लोहरदगा जिला के ग्राम इरगाँव बजार टाड़ में कुँड़ुख कत्थ तोलोंग सिकि सप्ताह दिवस लोहरदगा जिला 2023 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री रोशन कुजूर के स्वागत भाषण से शुरु हुआ। इस कार्यक्रम में बाईस पड़हा भण्डारी श्री मटकु उरांव सिसई गुमला ने लोगों को अपनी कुँड़ुख तोलोंग सिकि को अपने समाज की भाषा संस्कृति के संरक्षण के लिए अनिवार्य बताया। उन्होंने कहा कि अपने समाज की पहचान भाषा और संस्कृति है। इसलिए भाषा के बचाने के लिए उसका साहित्य अपनी लिपि में विकसित किये जाने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम का तकनीकि सहयोग करने वाली संस्था, अखड़ा कुँड़ुख चाला धुमकुडिया पड़हा अखड़ा, रांची के अध्यक्ष श्री जिता उरांव अददी ने समाज के लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार सभी समाज में अपनी अपनी भाषा संस्कृति है, उसी प्रकार हमारे कुँड़ुख समाज की अपनी भाषा, संस्कृति और लिपि है। यह लिपि अपने कुँड़ुख समाज की भाषा संस्कृति को संरक्षित करने में मददगार होगी, जिससे रोजगार का अवसर मिलेगा। कुँड़ुख तोलोंग सिकि को पाठय पाठन का आधार रखकर विद्यालय संचालक श्री संजीव उरांव ने अपने विद्यालय के बच्चों के साथ नृत्य के साथ संबोधन करते हुए कहा कि अपनी मातृभाषा एवं संस्कृति के साथ इंग्लिश–हिंदी के साथ अपनी कुँड़ुख तोलोंग सिकि को पूर्ण रूप से पढाई कराने की जरूरत है। तोलोंग सिकि के संस्थापक डा. नारायण उरांव ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि आज जो तोलोंग सिकि लिपि हमारे बीच आया है ये शोध कार्य झारखंड अंदोलन के समय से ही आरंभ हुआ था और सामाजिक अगुवा एवं शिक्षाविदों के सहयोग से वर्तमान स्थिति तक पहुँचा है। आज हमारे आदिवासी बच्चे को पढ़ने के लिए तोलोंग सिकि बन कर तैयार है जिससे आज बच्चे अपनी लिपि से मैट्रिक परीक्षा लिख रहे हैं साथ ही आज बच्चे अपनी संस्कृति भा ा की जानकारी भी ले रहे हैं। इस कार्यक्रम में टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर द्वारा संचालित कुँड़ुख भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केंद्र के पाँच सेंटर क्रमवार 1. आशा आदिवासी कुँड़ुख विद्यालय बलसोता, भंडरा 2. सात पड़हा कुँड़ुख विद्यालय पलमी, भंडरा 3. एंड़ खेप्पे कुँड़ुख विद्यालय ईरगावं, लोहरदगा 4. धुमकुडिया जोरी चेड़गा टोला, किसको 5. दयाल उरांव कुँड़ुख विद्यालय खोरका डिप्पा, किसको द्वारा अपनी प्रस्तुति दिया गया।

इस कार्यक्रम में बारह पड़हा दिवान लोहरदगा के श्री मंजन उरांव, आदिवासी छात्र संघ अधयक्ष लोहरदगा के श्री चंद्रदेव उरांव एवं अमित लोहरा, जिला प्रवक्ता लोहरदगा, जनजातीय एवं क्षेत्रीय विभाग राँची, में शोधार्थ लक्षमण उरांव, श्री जीता उरांव अधयक्ष अददी अखड़ा कुँड़ुख चाला पड़हा अखड़ा राँची, श्री रामेश्वर उरांव राँची, प्रभात उरांव, अरविंद उरांव कार्तिक उरांव आदिवासी कुँड़ुख विद्यालय मंगलो, राजेन्द्र उरांव, संजीव उरांव मेरले, मटकु उरांव, रोशन उरांव, रतिया उरांव, संजय उरांव, रचना उरांव, चमरा उरांव, फगनी उरांव, जुबबी उरांव, रंथु उरांव, एवं बारह स्कूल के छात्र, छात्राएँ एवं शिक्षक शिक्षिकाओं सहित अन्य गाँव से आये ग्रामीण महिलाओं पुरु ा उपस्तिथि थे। रिपोर्टर – सुकरु उरांव शिवनाथपुर सिसई गुमला।

14. कुँड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह समारोह दिवस राँची जिला 2023 सम्पन्न।

दिनांक 20/02/2023 दिन सोमवार को राँची जिला के बेड़ो प्रखण्ड के कठरटोली मैदान में एक दिवसीय कुंड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि सप्ताह रांची जिला दिवस 2023 समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में रांची जिला के कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि लिपि के पठन–पाठन से जुड़े छोटे–बड़े विद्यालय एवं धुमकुड़िया के छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक शामिल थे। इस अवसर पर तोलोंग सिकि लिपि के संस्थापक डॉ नारायण उरांव, विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग के पूर्व कुलपति डॉ. रविन्द्र नाथ भगत, अद्दी अखड़ा संस्था के अध्यक्ष श्री जिता उरांव, अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष फा. अगुस्तिन केरकेट्टा, शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया के जेनेरल मैनेजर श्री विजय कुजूर, सँवसे ख़ेःख़ेल राःजी आदिवासी परदाअ़ना खोंड़हा के अध्यक्ष श्री सुका उराँव, 22 पड़हा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा के देवान श्री मटकु उराँव एवं कोटवार श्री गजेन्द्र उराँव, मुखिया खुखरा पंचायत जतरू उरांव, रातु रांची से समाजसेवी श्रीमती चन्द्र प्रभा तिर्की एवं कुंड़ुख भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केन्द्र के शिक्षक छात्र उपस्थित थे। अतिथियों में से फा० अगुस्तिन केरकेट्टा ने कहा कि कुंड़ुख भाषा साहित्य के विकास में उस भाषा की अपनी लिपि आवश्यक है और तोलोंग सिकि से मैट्रिक परीक्षा लिखने के लिए जैक से अनुमति प्राप्ति के समय समाज के सभी लोग एक साथ जुड़कर राष्ट्रपति शासन 2009 के दौरान सफल हुए। इस मुहिम में वे भी एक सक्रीय कार्यकर्ता रहे। तोलोंग सिकि के सर्जक डा नारायण उरांव ने कहा कि आज के दौर में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू किया जा रहा है, जिसके तहत पाठ्यक्रम मैं हिन्दी, अंग्रेजी एवं मातृभा ाा शिक्षा शामिल है। वर्तमान में उरांव समाज को अपनी भाषा संस्कृति की रक्षा हेतु धुमकुड़िया को फिर से पुनर्गठित करना होगा। गाँव का धुमकुड़िया जगने से, बच्चे धुमकुड़िया से लूरकुड़िया (स्कूल) की ओर बढ़ेंगे तो भाषा संरक्षण का कार्य अपने आप होने लगेगा। श्री विजय कुजूर ने कहा कि धुमकुड़िया एक सामाजिक विश्वविद्यालय है। इस कार्यक्रम में टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर द्वारा संचालित कुँड़ुख भाषा तोलोंग सिकि शिक्षण केंद्र के पाँच सेंटर क्रमवार 1. कईली दइई लूरकुड़िया, बेड़ो 2. कार्तिक उराँव ए.वी.डी.एम. टांगरबसली 3. धुमकुड़िया कुल्ली, नगड़ी 4. धुमूकुड़िया पुरियो द्वारा अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर टाटा स्टील फाउंडेशन जमशेदपुर के सहयोग से प्रकाशित, कुँड़ुख टाईम्स पत्रिका का अंक 4, बिसुसेंदरा विशेषांक और अंक 05, धुमकुड़िया विशे ाांक एवं चिंचो डण्डी अरा ख़ीःरी पुस्तक का वितरण किया गया। इस आयोजन में भाषा शिक्षण केन्द्र में से 10 केन्द्र शामिल थे। कार्यक्रम के अंत में सभी लोग सामुहिक भोजन में शामिल हुए। इस आयोजन में धुमकुड़िया पुरयो, धुमकुड़िया कुल्ली के संचालक सदस्य एवं 12 पड़हा तथा 22 पड़हा क्षेत्र के श्री जगरनाथ उरांव, श्रीमती बेरोनिका उरांव, श्री करमा भगत, श्री आदित्य कुजूर, श्री अरविन्द उरांव, श्री एतवा उरांव आदि शामिल थे। इस कुड़ुख़ भाषा तोलोंग सिकि दिवस में पड़हा कोटवार श्री गजेंद्र उरांव, सेवा निवृत्त शिक्षक अनेकों गांव के बच्चे बच्चियां तथा बुजुर्ग उपस्थित थे। रिपोर्टर – सुकरू उरांव शिबनाथपुर, सिसई, गुमला।

15. ऑल कुँडुख़ स्टूडेन्ट यूनियन, असम द्वारा आयोजित ''तोलोंग सिकि कार्यशाला'' में डॉ० नारायण उराँव